रीतिकालीन कवियों का वर्ग-विभाजन और घनानन्द का स्थान

हिन्दी साहित्य के इतिहास में काल-निर्धारण और प्रवृत्ति निरूपण का कार्य गार्सा द तासी से लेकर अब तक अनेक महत्वपूर्ण विद्वानों द्वारा किया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' इनमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण स्थान रखता है। परवर्ती इतिहास लेखक जाने-अनजाने शुक्ल जी से प्रभावित होते रहे हैं। रीतिकाल के विषय में आचार्य शुक्ल जी के विचारों को जानना सर्वप्रथम आवश्यक है। रीतिकाल का सामान्य परिचय प्रस्तुत करते हुए शुक्ल जी ने पहला वाक्य (भक्ति के संदर्भ में) लिखा है कि - "हिन्दी काव्य अब पूर्ण प्रौढ़ता को पहुँच गया है।" ये वाक्य रीतिकाल के प्रति शुक्ल जी की धारणा को व्यक्त करती है। उनकी धारणा यही दिखाई पड़ती है कि अब विकास की संभावनाएँ समाप्त हो चुकी थीं। रीतिकाल को शुक्ल जी ने भक्तिकाल के सामने दूसरे दर्जे का ही माना है। आगे के आचार्यों पर इस धारणा का प्रभाव दिखाई देता है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र और डा० नगेन्द्र ने शुक्ल जी की धारणा का निराकरण तो किया परन्तु शुक्ल जी द्वारा प्रक्षिप्त अवधारणा को खंडित नहीं कर पाए। वास्तविकता यह है कि आचार्य ~~शुक्ल~~ शुक्ल के विचार और इन विद्वानों के विचारों का मूल तत्व जो भारतीय भावक संवेदना है, एक होने के कारण, भिन्न नहीं हो सके। आचार्य शुक्ल द्वारा इसका सम्यक प्रतिनिधित्व होने के कारण उनके द्वारा की गई स्थापनाओं का विस्थापन सरल नहीं है।

आचार्य शुक्ल जी ने रीतिकालीन कवियों के आठ (गद्य, नाटक के साथ दस) वर्गों का स्पष्ट उल्लेख किया है —

1. **रीतिग्रन्थकार कवि** :— इस वर्ग में उन प्रतिनिधि कवियों का उल्लेख है जिन्होंने लक्षण ग्रन्थों की रचना की है।

Scanned with CamScanner

२) रीतिकाल के अन्य कवि -

इस शीर्षक से आचार्य शुक्ल उन कवियों का उल्लेख करते हैं जिन्होंने रीतिग्रंथ न लिख कर दूसरे प्रकार की पुस्तकें लिखी हैं। इनके विषय में शुक्ल जी लिखते हैं - "ये पिछले वर्ग के प्रतिनिधि कवियों से केवल इस बात में भिन्न हैं कि इन्होंने क्रम से रसों, भावों, नायिकाओं और अलंकारों के लक्षण कहकर उनके अन्तर्गत अपने पद्यों को नहीं रखा है।" आगे लिखा है - "ऐसे कवियों में घनानन्द सर्वश्रेष्ठ हुए हैं।"

3) प्रबंध काव्य लिखने वाले कवि -

प्रबन्ध काव्य की उन्नति इस काल में कुछ विशेष नहीं हो पाई। जो लिखे गए उनमें दो चार ही कवित्व का यथेष्ट आकर्षण पाया जाता है।

४) वर्णनात्मक प्रबंध लिखने वाले कवि -

कथात्मक प्रबन्धों से भिन्न एक और प्रकार की रचना भी देखने को आती है जिसे वर्णनात्मक प्रबन्ध कह सकते हैं। दानलीला, मानलीला, झूला वर्णन इत्यादि इसी प्रकार की रचनाएँ हैं।

5) नीति के फुटकल कवि -

शुक्ल जी इनके विषय में कहते हैं - "ऐसी रचना करने वालों को हम 'कवि' न कहकर 'सूक्तिकार' कहेंगे। रीतिकाल के भीतर वृंद, गिरिधर, घाघ और बैताल अच्छे सूक्तिकार हुए हैं।

6) ज्ञानोपदेशक कवि -

ये वे कवि हैं जो ब्रह्मज्ञान और वैराग्य की बातों को पद्य में कहते हैं।

7) भक्त कवि -

इसमें वह कवि आते हैं जिन्होंने भक्ति और प्रेमपूर्ण विनय के पद आदि पुराने भक्तों के ढंग पर गाए हैं।

8) आश्रयदाताओं की प्रशंसा में लिखने वाले कवि -

वीर रस

को फुटकर कविताएँ आश्रयदाताओं की प्रशंसा में बराबर बनती रही हैं जिनमें युद्धवीरता और दानवीरता दोनों की अत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा है।

9) गद्य लिखने वाले कवि —

भक्तिकाल के समान रीतिकाल में भी थोड़े गद्य दिखायी पड़ते हैं।

10) नाटक लिखने वाले कवि —

रीतिकाल में ही रीवां के महाराज विश्वनाथ सिंह ने हिन्दी का प्रथम नाटक (आनंद रघुनन्दन) लिखा। इसके उपरांत गणेश कवि ने 'प्रद्युम्न विजय' नामक एक पद्यबद्ध नाटक लिखा।

शुक्ल जी ने उपर्युक्त वर्गों के अधिकांश कवियों और उनके काव्य का महत्व नहीं के बराबर स्वीकार किया है। किसी को सूक्तिकार, किसी को उपदेशक कहा। किसी रचना के विषय में ~~विषय~~ यहाँ तक लिख दिया कि "इनकी रचना में सच पूछिए तो कवियों ने अपनी प्रतिभा का अपव्यय ही किया है।"

शुक्ल जी के विभाजन से स्पष्ट है कि रीतिकाल के कवियों में दो वर्ग महत्वपूर्ण हैं — लक्षणग्रंथों की रचना करने वाले प्रतिनिधि कवि और वे (महत्वपूर्ण) कवि जो पिछले वर्ग के प्रतिनिधि कवियों से केवल इस बात में भिन्न हैं कि इन्होंने लक्षणग्रंथों की रचना नहीं की है। ध्यान देने योग्य है कि दूसरे वर्ग के कवियों को शुक्ल जी प्रतिनिधि कवियों से भिन्न मानते हैं कम नहीं।

बिहारी को शुक्ल जी ने प्रतिनिधि कवियों की श्रेणी में रखा। वे यह मानते हैं कि रीतिकालीन कवियों में सबसे ज्यादा प्रसिद्धि बिहारी को मिली। घनानन्द के विषय मे शुक्ल जी के विचार हैं — 'ये साक्षात रसमूर्ति और ब्रजभाषा काव्य के प्रधान स्तंभों में हैं।" बिहारी से तुलना करते हुए कहते हैं — 'घनानन्द ने न तो बिहारी की तरह विरह ताप को बाहरी माप से

से गाया है, न कहीं उछलकूद दिखाती है। जो कुछ हलचल है वह भीतर की है, बाहर से वह वियोग प्रशांत और गंभीर है.... इसकी मौनमयी पुकार है।"

प्रकृति का वर्णन, भाव, संयोग-वियोग वर्णन, विशेषकर वियोग श्रृंगार वर्णन और भाषा के लिहाज से को शुक्ल जी श्रेष्ठ मानते हैं वह बिहारी की अपेक्षा घनानन्द में अधिक उत्कृष्टता स्वीकार करते हैं। फिर भी बिहारी की तुलना में घनानन्द को कम महत्व दे सके। बिहारी को शुक्ल जी ने प्रतिनिधि कवियों की श्रेणी में रखा है और घनानन्द को अन्य कवियों में। अतः सामान्य पाठक के मन में धारणा बन जाती है कि लक्षण निरूपण करने वाले सभी कवियों की अपेक्षा घनानन्द का कवित्व कुछ घटकर है जबकि घनानन्द का कवित्व श्रेष्ठ है।

डा० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिमुक्त-स्वच्छन्द प्रेम कवियों में रसखान, आलम, घनानन्द को रखा है। हरिऔध ने रीतिग्रन्थकारों के अतिरिक्त प्रेममार्गी ब्रजभाषी कवियों में घनानन्द को स्थान दिया है।

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'स्वछन्द प्रेमधारा' के अन्तर्गत घनानन्द को गिनवाया है। डा० भगीरथ मिश्र डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डा० बच्चन सिंह और डा० जगदीश गुप्त ने भी घनानन्द को रीतिमुक्त स्वछन्द कवियों के वर्ग में ही रखा है। डा० मनोहरलाल गौड़ ने लिखा है –" किन्तु निरापद भाव से जिन्हें स्वछन्द धारा के कवि कहा जा सकता है वे तो घनानन्द, बोधा और ठाकुर ही हैं।" गौड़ ने विशिष्ट अध्ययन के लिए घनानन्द को ही चुना क्योंकि वो घनानन्द को श्रेष्ठ कवि के रूप में स्वीकार करते हैं।

डा० कृष्णचन्द्र वर्मा ने रीतिकाल के पूर्व से ही रीतिस्वच्छंद के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और इसके अन्तर्गत रसखान, आलम, घनानन्द बोधा का नाम गिनाया है। इन सभी वर्गीकरणों में घनानन्द को अन्य कवियों से कुछ बहुत अलग करके नहीं देखा गया है। घनानन्द के महत्व की उपेक्षा का यही क्रम 'हिन्दी साहित्य का

इतिहास' नामक महाग्रंथ में मिलता है।

आवश्यकता इस बात की है कि रीतिकाल के कवियों का अध्ययन उनके आचार्यत्व के आवरण को हटाकर किया जाये। आचार्य या रीतिग्रंथ के प्रणेता के वर्ग में अनेक ऐसे कवि हैं जिनका कवि रूप महत्वपूर्ण है जबकि आचार्यत्व की दृष्टि से उनका महत्व कम है। स्वच्छन्द काव्य धारा के अन्तर्गत घनानन्द को मानकर उनके उन महत्वपूर्ण पक्षों की उपेक्षा की गई है जो रीति परम्परा से प्रभावित है। अलंकार, श्रृंगारवृत्ति, अभिव्यंजना, उक्ति चमत्कार आदि की पूरी रीति परम्परा घनानन्द के काव्य में उपलब्ध है।

वास्तव में घनानन्द रीति ग्रंथ का उद्देश्य न रखते हुए भी रीतिकाव्य से अप्रभावित न थे और उनका काव्य सेनापति, देव आदि की भाँति काव्य की समस्त विशेषताएं अपनाए हुए है।
